

राष्ट्रीय एकताके सूत्रधार-सरदार वल्लभभाई पटेल

जयंती आज

भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती आज पूरे देश में राष्ट्रीय एकता दिवस के रूप में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के पहले उप-प्रधानमंत्री और गृहमंत्री थे।

आजादी के बाद देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती बिखरी हुई रियासतों को एक भागे में पिरोने की थी। सरदार पटेल ने अपनी अद्भुत प्रशासनिक क्षमता, दूरदर्शिता और दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय देते हुए 560 से अधिक देशी रियासतों का भारत संघ में शांतिपूर्ण विलय कराया। उनके इसी अदम्य साहस और दृढ़ संकल्प के कारण कृतज्ञ राष्ट्र उन्हें लौह पुरुष के नाम से याद करता है। पटेल जी ने



अखंड भारत का निर्माण और दृढ़ नेतृत्व

स्वतंत्रता संग्राम में बड़-चढ़कर हिस्सा लिया। साल 1928 में गुजरात में हुए प्रसिद्ध बारदोली सत्याग्रह का उन्होंने सफल नेतृत्व किया। इस आंदोलन की सफलता से प्रभावित होकर वहाँ की महिलाओं ने उन्हें सरदार (जिसका अर्थ नेता या प्रमुख होता है) की उपाधि दी। अखिल भारतीय सेवाओं के जनक स्वतंत्र भारत की प्रशासनिक व्यवस्था को

मजबूत करने में सरदार पटेल की अहम भूमिका थी। उन्होंने भारतीय सिविल सेवाओं के महत्व को समझा और आधुनिक अखिल भारतीय सेवाओं की नींव रखी, जिसके कारण उन्हें इन सेवाओं का संरक्षक संत या जनक भी माना जाता है। उनके इसी महान योगदान को अमर बनाए रखने के लिए गुजरात के केवडिया (एकता नगर) में नर्मदा नदी के तट पर विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा स्टेच्यू ऑफ यूनिटी बनाई गई है, जिसकी ऊंचाई 182 मीटर है। यह विशाल स्मारक देश की एकता और अखंडता के प्रति उनका प्रतिबद्धता का प्रतीक है।सरदार वल्लभभाई पटेल का जीवन हमें सिखाता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने संकल्प से पीछे नहीं हटना चाहिए। आज के दिन देश भर में रन फॉर यूनिटी जैसी दौड़ और सपथ ग्रहण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जो हमें आपस में मिलकर रहने और देश को मजबूत बनाने की प्रेरणा देते हैं।

पापाने मेरे लिए किसीसे भीख नहीं मांगी – सारा अली खान

अभिनेत्री सारा अली खान अपनी फिल्म उड़ता तीर को लेकर चर्चा में हैं। इस बीच उन्होंने अपने पारिवारिक बैकग्राउंड को लेकर चल रही चर्चाओं पर बात की है। उन्होंने साफ किया कि उनके पिता और अभिनेता सैफ अली खान ने कभी भी उनके फिल्म कॉन्ट्रैक्ट्स पर बातचीत नहीं की। उन्होंने एक मशहूर फ़िल्मी परिवार से आने के दोहरे पहलुओं पर चर्चा की।

बातचीत में सारा ने कहा, मैं अपनी सिंगल मदर के साथ रहती हूँ। मेरे पिता कभी किसी ऑफिस में जाकर मेरे कॉन्ट्रैक्ट्स पर बातचीत नहीं करते थे और न ही उन्होंने कभी किसी से मुझे अपनी फिल्मों में लेने की गुजारिश की। जब मुझे केदारनाथ के समय कोई परेशानी हुई, तो मैंने उसे खुद ही सुलझाया। उस वक्त मेरे साथ कोई नहीं था। यह एक दोधारी तलवार की तरह है, क्योंकि इंडस्ट्री में मेरा कोई

गाँडफादर नहीं रहा है। सारा ने माना कि अपने परिवार की वजह से उन्हें कुछ खास फायदे जरूर मिले हैं। उन्होंने कहा कि वह इतनी नासमझ या भ्रम में नहीं हैं कि उन मौकों को न देख सकें जो उनके पारिवारिक बैकग्राउंड की वजह से उन्हें शुरुआत में मिल गए थे। हालाँकि, उनका यह भी मानना है कि लगातार होने वाली जाँच-परख की वजह से उन पर उम्मीदों का बोझ डाल दिया जाता है। सारा ने इस बात पर जोर दिया कि नेपोटिज्म (भाई-भतीजावाद) शब्द को पूरी तरह से नकारात्मक बना दिया गया है। उन्होंने तर्क दिया कि यह उन स्टार किड्स जैसे कि खुद सारा, जाह्नवी कपूर और अनन्या पांडे की कड़ी मेहनत को कम करके आँकता

रोमांटिक फिल्म में नजर आने वाले हैं अहान शेटी

सुनील शेटी के बेटे और अभिनेता अहान शेटी फिल्म 'बॉर्डर 2' की सफलता के बाद एक बार फिर एक्शन के मैदान में उतरने के लिए तैयार हैं। अभिनेता अपनी अगली फिल्म 'सनकी' की शूटिंग शुरू करने जा रहे हैं। इस फिल्म का निर्देशन 'रुस्तम' फेम मशहूर निर्देशक टीनू सुरेश देसाई कर रहे हैं। जॉनट्र वासुदेव की तरफ से लिखी गई 'सनकी' मूल रूप से एक प्रेम कहानी है। इसमें दमदार और जबरदस्त एक्शन भी देखने को मिलेगा। फिल्म की शूटिंग 30 अक्टूबर से भोपाल में शुरू होगी। 'बॉर्डर 2' में अपने अभिनय और फिल्म को मिली शानदार सफलता के बाद अहान ने अपने अगले प्रोजेक्ट्स का चयन काफी सोच-समझकर किया है। अब वह 'सनकी' में एक नया किदार निभाते हुए नजर आएंगे। इसके बाद वह विक्रम भट्ट की फिल्म '1920 कोल्ड चिट' में नजर आएंगे। इसके अलावा उनकी कुछ अन्य फिल्मों की शूटिंग भी 2027 में शुरू होने वाली है। निर्देशक टीनू सुरेश देसाई अपनी विशाल टीम के साथ पहले ही भोपाल पहुंच चुके हैं। वह 30 अक्टूबर से शुरू होने वाली शूटिंग से पहले तैयारियों को अंतिम रूप दे रहे हैं। फिलहाल फिल्म की कहानी और इसके विषय को गोपनीय रखा गया है। निर्माता आने वाले समय में फिल्म से जुड़ी जानकारीयों का खुलासा धीरे-धीरे करेंगे। 'सनकी' का निर्माण बी द पीपल, रोरेंस रिबर प्रोडक्शंस और पाल्स एंड पीयर्स एंटरटेनमेंट के बैनर तले किया जा रहा है। यह फिल्म 2027 की पहली छमाही में सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

पितासे मिली सीख हमेशा साथ रखी- रवीना टंडन

टंडन का जन्म मुंबई में हुआ। रवीना को फिल्मों और सिनेमा का लगाव अपने पिता से मिला। वे दिवंगत निर्देशक रवि टंडन की बेटी हैं। रवीना के पिता का नाम रवि टंडन और मां का नाम वीना है। दोनों के नाम की मिलाकर उनका नाम रवीना रखा गया। उनके घर का नाम मुनमुन है। अभिनेत्री ने अपनी शुरुआती शिक्षा जमुनाबाई पब्लिक स्कूल से ली। इसके बाद उन्होंने स्नातक करने के लिए मीठीबाई कॉलेज में दाखिला ले लिया। उन्होंने कॉलेज के दिनों से मॉडलिंग शुरू कर दी थी। उनकी सुंदरता की वजह से उन्हें पहाड़ के दौरान हो बहुत से ऑफर मिलने लगे थे, जिसके बाद उन्होंने ग्रेजुएशन के दूसरे साल में ही पहाड़ छोड़ दी थी। रवीना टंडन ने साल 1991 में फिल्मों में कदम रखा। उनकी पहली फिल्म सलमान खान के साथ थी। इस फिल्म का नाम पथर के फूल था। फिल्म में रवीना की एक्टिंग और उनकी खूबसूरती की खूब तारीफ हुई। उन्हें न्यू फेस ऑफ द ईयर का फिल्मफेयर अवार्ड भी मिला। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। रवीना टंडन ने 90 के दशक में अंडाज अपना अपना से लेकर मोहरा, दुल्हे राजा और शूल जैसी फिल्मों में काम किया। फिल्म मोहरा का आइकॉनिक गाना टिप टिप बरसा पानी तो आज भी लोग यूट्यूब पर देखना पसंद करते हैं। रवीना टंडन के पिता रवि टंडन हिंदी सिनेमा के जाने माने निर्माता-निर्देशक रहे, लेकिन रवीना टंडन ने यह कभी नहीं सोचा कि उनके पिता उन्हें फिल्मों में लॉन्च करेंगे। रवीना टंडन कहती हैं, पापा ने हमेशा मुझे आत्मनिर्भर रहना सिखाया। वह आगरा से बिना कुछ लिए आए और अपने दम पर मुंबई सब कुछ बनाया। मैंने भी सोचा कि अपने दम पर फिल्में हासिल करना है। पापा से हमेशा अपने पैरों पर खुद खड़े होने की प्रेरणा मिली। एक इंटरव्यू में रवीना ने बताया, चाहे मेरी निजी जिंदगी में या करियर का सबसे बुरा दौर चल रहा हो। मैंने पापा से सीखा है कि ईमानदारी, विनम्रता, धैर्य और आत्मवश से बड़ी से बड़ी परेशानी का मुकाबला किया जा सकता है। मुझे याद है एक बार पापा मेरी फिल्म के सेट पर आए और एक बात कही। उन्होंने कहा कि एक बच्चा जब चलना सीखता है तो बहुत बार गिरता है, लेकिन वह पसर कर बैठ नागों

भारतकी आयरन लेडी इंदिरा गांधी

पुण्यतिथि आज

31 अक्टूबर यह तारीख भारत के इतिहास में एक गहरा निशान छोड़ती है। यही वह दिन है जब देश ने अपनी पहली महिला प्रधानमंत्री, इंदिरा गांधी को खो दिया था। वे सिर्फ एक नेता नहीं थीं, बल्कि भारत की राजनीतिक दृढ़ता, महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता की प्रतीक थीं। उनका जीवन संघर्ष, निर्णय और दूरदर्शिता का अद्भुत संगम था जिसने भारत को वैश्विक स्तर पर नई पहचान दी। इंदिरा प्रियदर्शिनी गांधी का जन्म उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में 19 नवंबर 1917 को हुआ था। उनके पिता देश के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू थे। माता का नाम कमला नेहरू था। इंदिरा गांधी ने शांतिनिकेतन से अपनी शिक्षा हासिल की, बाद में इंग्लैंड के ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से पढ़ाई पूरी की। बाद में उनका विवाह फिरोज गांधी से हुआ। इंदिरा गांधी बचपन से ही राजनीति के वातावरण में पली-बढ़ीं। वह अपने पिता के साथ राजनीति में सक्रिय



जिनकी इच्छाशक्ति ने बदला देशका भविष्य

भूमिका में रहीं। पिता नेहरू के सान्निध्य में उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन की ज्वाला को करीब से देखा और उसी ने उनके भीतर नेतृत्व की लौ जलाई। जब देश आर्थिक संकट और अस्थिरता से जूझ रहा था, तब इंदिरा गांधी ने मजबूत नेतृत्व के साथ भारत की बागडोर संभाली। साल 1966 में वह देश की पहली महिला प्रधानमंत्री नियुक्त हुईं। 'गरीबी हटाओ' का नारा-इंदिरा गांधी ने समाज के निचले तबके के उत्थान के

लिए नीतियां बनाई और गरीबी हटाओ अभियान चलाकर आम जनता में उम्मीद जगाई। 1971 का भारत-पाक युद्ध और बांग्लादेश की आजादी उनके नेतृत्व में भारत ने पाकिस्तान को हराया और बांग्लादेश का जन्म हुआ। इस विजय ने उन्हें भारत की लौह महिला बना दिया। इंदिरा गांधी ने 1974 में भारत को परमाणु शक्ति संपन्न देशों की श्रेणी में खड़ा किया। उन्होंने कृषि क्षेत्र में बड़े सुधार किए, जिससे भारत खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर हुआ। इंदिरा गांधी ने बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया। इस फैसले ने आर्थिक असमानता को घटाने और गरीबों को वित्तीय सशक्तिकरण देने में मदद की। 1975 में इंदिरा गांधी ने देश में आपातकाल लगाया, यह उनके राजनीतिक जीवन का सबसे विवादित निर्णय रहा। 31 अक्टूबर 1984 को उनके अपने ही अंगरक्षकों द्वारा उनकी हत्या कर दी गई। उनकी मृत्यु ने पूरे देश को झकझोर दिया। आज भी वे भारतीय राजनीति की सबसे सशक्त महिला नेताओं में गिनी जाती हैं।

खूनी व बादी बवासीर में बेहद असरकारक

अर्श्वेदा

सुविचार

ARSHVEDA Capsule

AN AYURVEDIC MEDICINE FOR PILES

Power of 4 Herbs

जो पानी से नहाएगा वो सिर्फ लिबास बदलेगा, जो पसीने से नहाएगा वो इतिहास बदलेगा।

• 100% आयुर्वेदिक • सुरक्षित • असरदार

Customer Care : 9628078000

www.rphealthgroup.com

TATA 1mg | amazon | Flipkart

अपनी जिंदगी

सभी सीमाओंको तोड़नेका साधन

आगर भक्ति का सैलाब आएगा तो वह बड़ी सहजता से आपको सभी बाधाओं व सीमाओं को अपने साथ बहा ले जाएगा। इस देश में, धरती की इस पुरानी सभ्यता में, प्रतिभा बुनियादी रूप से शिक्षा की देन नहीं, बल्कि भक्ति की देन रही है। महान वैज्ञानिक, डॉक्टर और गणितज्ञ जैसे सभी लोग ऊंची कोटि के भक्त थे, क्योंकि भक्ति में आप समावेशी हो जाते हैं। समावेश में आपसे परे कुछ नहीं होता। इस देश में, धरती की इस पुरानी सभ्यता में, प्रतिभा बुनियादी रूप से शिक्षा की देन नहीं, बल्कि भक्ति की देन रही है। महान वैज्ञानिक, डॉक्टर और गणितज्ञ जैसे सभी लोग ऊंची कोटि के भक्त थे, क्योंकि भक्ति में आप समावेशी हो जाते हैं। समावेश में आपसे परे कुछ नहीं होता। भक्त होने का मतलब है बोध और विवेक के एक ऐसे आयाम पर पहुंचना जहां आप दिव्यता की संभावना को निर्माित करते हैं। भक्त कभी हारे जड़ित सिंहासन पर नहीं बैठता और न ही वह कभी उसकी कामना करता है। उसकी एकमात्र कामना ईश्वर की गोद में बैठने की होती है। उसकी कामना कहीं पहुंचने या जाने की नहीं होती। कोई भी ईसान सारी सृष्टि के बारे में अपने मौलिक बोध को बदलकर ही ईश्वर की गोद में बैठ सकता है। यह कोई याज्ञ नहीं है, जिसे तब करके कोई वहां पहुंच सकता है। भक्ति ईसान के भीतर मौजूद सभी सीमाओं को तोड़ने का एक जबरदस्त साधन है। ये सीमाएं चाहे मनोवैज्ञानिक हों, भावनात्मक हों या फिर कार्मिक, अगर भक्ति का सैलाब आएगा तो वह बड़ी सहजता से इन सभी बाधाओं व सीमाओं को अपने साथ बहा ले जाएगा। जबकि निर्धारित साधना के जरिए इन सीमाओं को हटाने के लिए बहुत सारा काम करना पड़ेगा। लेकिन जो साधना तीव्र भक्ति की अवस्था में की जाती है, उससे आप उन सारी सीमाओं को बहा सकते हैं, जो आपने अपने भीतर बना रखी हैं। अगर आप एक खूबसूरत गुलदस्ता देखते हैं, तो यह जानने की सहज इच्छा होती है कि इसे किसने बनाया है। आप एक खूबसूरत कलाकृति देखते हैं तो आप स्वाभाविक रूप से जानना चाहेंगे कि उसे किसने बनाया है। अगर आप एक खूबसूरत बच्चा देखते हैं तो आप जानना चाहेंगे कि इसके माता-पिता कौन हैं। लेकिन आश्चर्य यह है कि बहुत ही कम लोग ऐसे होंगे जो इस सृष्टि की सबसे बेहतरीन रचना 'ईसान' के बारे में सवाल पूछते होंगे कि ' इसका रचयिता कौन है?' बल्कि आपके पास इसके रेडिमेड जवाब होंगे। भक्ति कोई रेडिमेड जवाब नहीं है। भक्ति आपको वहां ले जाने का एक साधन है। भक्ति कोई निष्कर्ष नहीं है, जो ईसान निकालता है। भक्ति इन सारे निष्कर्षों से परे जाने का रास्ता है। भक्ति उस सैलाब को तैयार करने का एक तरीका है, जो अनुभवों की सारी सीमाओं से परे आपको बहा ले जाता है। अगर आपने खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया तो आप न सिर्फ खुद को पूरी तरह से शुद्ध करेंगे, बल्कि अपने आसपास के पूरे स्पेस को भी शुद्ध कर पाएंगे। इससे देश और दुनिया को जबरदस्त तरीके से फायदा मिलेगा। भक्ति कोई हफ्ते दो हफ्ते का काम नहीं है। आपको अपने रोजाना के जीवन में इसे लगातार बहने देना चाहिए। यह कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसे आप करते हैं - यह वह चीज है, जिसे आप जीते हैं। यह आपकी सांस की तरह होती है। तमिलनाडु सरकार का प्रतीक एक मंदिर है। उन्होंने इस प्रतीक को इसलिए चुना, क्योंकि यह भूमि भक्ति में इतनी सारबोह है कि आप कहीं भी जाएं, आपको हर जगह मंदिर जैसा महसूस होगा।

क्योंकि भक्ति यहां के लोगों के जीवन का मुख्य हिस्सा हुआ करती थी। यहां लोगों ने, सबसे पहले विशाल मंदिर बनाए और फिर उन्होंने अपने रहने का इंतजाम किया। उन लोगों ने एक शानदार मंदिर बनाने में अपनी दो से तीन पीढ़ियां लगा दीं और तब तक ये खुद कच्चे मकान या झोपड़ी में रहे। उन्होंने अपने रहने की परवाह नहीं की, क्योंकि उनके लिए महत्वपूर्ण चीज कृपापूर्ण स्थान को तैयार करना और सब लोगों को उसका हिस्सा बनाना था।

सितारोंके खिलाफ फतवा

शाहरुख खान ने 2013 में अपने बच्चे का लिंग परीक्षण कराया था। हालाँकि शाहरुख खान ने इस बात का खंडन किया था। सरोगेसी के जरिए बच्चा पैदा करने और कथित तौर पर जन्म से पहले लिंग परीक्षण के आरोपों पर फतवा जारी करते हुए मरकजी दारुल इफ्ता दरगाह आला हजरत ने इसे गैर इस्लामिक बताया था। साल 2007 में सलमान खान एक गणेश पूजा में शामिल हुए थे और आरती की थी। इस मामले



पर बरेली के दारुल-इफ्ता-मंजूर-ए-इस्लाम की तरफ से फतवा जारी करके इसे गैर इस्लामिक बताया गया था। इसके अलावा सलमान खान ने साल 2008 में मैडम तुसाद मोम संग्रहालय में अपनी मोम की प्रतिमा का अनावरण किया था। इस पर मुफ्ती दारुल इफ्ता सलीम अहमद कासमी ने उनके खिलाफ फतवा जारी करके कहा था कि इस्लाम में मूर्ति बनाना मना है। बॉलीवुड अभिनेत्री सारा अली खान के केदारनाथ मंदिर जाने को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। बरेली के धर्मगुरु और ऑल इंडिया मुस्लिम जमात के राष्ट्रीय अध्यक्ष, मौलाना मुफ्ती शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने एक फतवा जारी किया। उन्होंने सारा अली खान के मंदिर जाने और प्रार्थना करने को इस्लामी कानून (शरिया) के तहत नाजायज और हaram बताया है। इस खबर में जानिए और कीन से कलाकारों के खिलाफ फतवा जारी किया गया है। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार हाल ही में सारा अली खान ने केदारनाथ में मुख्य मंदिर और पास के भुक्तुं धैरव मंदिर में पूजा-अर्चना और आरती में हिस्सा लिया। इस पर मौलाना मुफ्ती शहाबुद्दीन रजवी बरेलवी ने कहा किसी भी मुसलमान के लिए, चाहे वह पुरुष हो या महिला किसी दूसरे धर्म की आस्था में शामिल होना, प्रार्थना करना और धार्मिक अनुष्ठान करना, शरिया के तहत नाजायज माना जाता है। इस तरह के काम करने की इजाजत नहीं है। इसलिए, अगर सारा अली खान ने अपनी मर्जी से केदारनाथ मंदिर जाकर प्रार्थना की और आशीर्वाद मांगा है, तो उन्होंने गुनाह किया है। यह हaram काम है। बॉलीवुड के सुपरस्टार आमिर खान ने हाल ही में अपनी पार्टनर गौरी स्प्रेट के साथ शादी की। गौरी दूसरे धर्म से ताल्लुक रखती हैं जबकि आमिर खान मुसलमान हैं। शादी के बाद अलीगढ़ के मुस्लिम पर्सनल दारुल इफ्ता के शाही चीफ मुफ्ती मौलाना चौधरी इब्राहिम हुसैन ने फतवा जारी करते हुए उनकी शादी को शरिया के खिलाफ बताया था। साल 2016 में जिमी शेरगिल पर आरोप लगे कि उन्होंने फिल्म शोरगुल में अभिनय करने और फिल्म के दृश्यों/संवादों से मुस्लिम समुदाय की भावनाओं को आहत किया। इस मामले पर उनके खिलाफ फतवा जारी किया गया था।



है, जबकि अपने माता-पिता को चुनने में इन कलाकारों का कोई हाथ नहीं था। सारा ने यह तो माना कि उन्हें और उनके साथियों को ऐसे शानदार डेब्यू मिले, जिनके लिए कई नए कलाकार तरसते हैं, लेकिन उन्होंने सवाल उठाया कि आखिर खुद को साबित करने का बोझ हमेशा उन्हीं के कंधों पर क्यों रहता है? हिंदी सिनेमा में अपने आठ साल के सफर के बाद, उनका कहना है कि अब उन्हें बार-बार यह साबित करने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए कि वह इंडस्ट्री में अपनी जगह की हकदार हैं। सारा ने कहा कि भले ही शुरुआत में मिलने वाले फायदे से इनकार नहीं किया जा सकता, लेकिन लंबे समय तक टिके रहने के लिए अपनी जिम्मेदारी खुद लेना और स्वतंत्र होना बहुत जरूरी है।सारा हाल ही में निर्देशक आकाश ए. कौशिक की फिल्म उड़ता तीर में नजर आई। फिल्म में आयुष्मान खुराना, राहुल बोस, राम कपूर, गुलशन ग्रोवर, रघुवीर यादव, बृजेंद्र काला, संदीप आनंद और अन्य कलाकार भी प्रमुख भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म बॉक्स ऑफिस ठीक-ठाक प्रदर्शन कर रही है।



जब भी 90 के दशक की चर्चित हीरोइनों का नाम लिया जाता है, तो रवीना टंडन के बिना चर्चा अधूरी होती है। साल 1991 में सिनेमा की दुनिया में इन्होंने कदम रखे। पहली ही फिल्म इंडस्ट्री के दबंग सलमान खान के साथ हुई। इस नयी अभिनेत्री के पास पिता से मिली कुछ सीख थीं और अदाकारी की प्रतिभा थी। पिता से मिले सबक और उसूल हमेशा साथ रखे। अभिनय समय के साथ निखरता गया। रवीना

